॥ओ३म्॥

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

युवा निर्माण

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का मासिक मुखपत्र
(सार्वदेशिक आर्य वीर दल की एक इकाई)

युवकों का होता जहाँ चरित्र निर्माण, आर्य वीर दल है उसका नाम

वर्ष- 1, अंक- 2
माह- मार्च, 2017

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,117
विक्रमी संवत्- 2073
दयानन्दाब्द- 194

प्रति शुल्क- 15/-
वार्षिक शुल्क- 150/-

"युवा निर्माण" पत्रिका का भव्य विमोचन व टंकारा मोटरसाईकिल यात्रा विशेषांक

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) के भव्य शताब्दी समारोह में हिमाचल के राज्यपाल डा. आचार्य देवव्रत, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहरलाल खट्टर, सार्व.आ.प्र.स. के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, हरियाणा आ.प्र.स.के प्रधान मास्टर रामपाल आर्य व महाशय धर्मपाल जी M.D.H. के कर-कमलों द्वारा "युवा निर्माण" पत्रिका का भव्य विमोचन

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा आयोजित राष्ट्र एकता व अखण्डता मोटरसाईकिल यात्रा (2600 कि.मी. से अधिक) दिल्ली-टंकारा (गुजरात)-दिल्ली का ओ३म् ध्वज दिखाकर नेहरू पार्क, दिल्ली से शुभारम्भ करते हुए महाशय धर्मपाल जी M.D.H.

॥ राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद का त्याग करें ॥

इस यात्रा के सौजन्यकर्त्ता :- महाशय धर्मपाल जी M.D.H. द्वारा

आर्य समाज सी-3, जनकपुरी, दिल्ली में मोटरसाईकिल यात्रा के आर्यवीरों को प्रशस्ति-पत्र वितरण

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद के शताब्दी समारोह पर आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश द्वारा आयोजित टंकारा मोटरसाईकिल यात्रा के आर्यवीरों को हिमाचल के राज्यपाल डॉ. आचार्य देवव्रत, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल खट्टर व सार्व.आ.प्र.स. के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल द्वारा आशीर्वाद व शुभकामनाएं एवं आ.वी.द.दि.प्र. के संचालक श्री जगवीर आर्य का अभिनन्दन

एक सत्य कथा जो प्रायः हम सब पर चरितार्थ है

आज भौतिकता के युग में विवाह के उपरान्त गर्भाधान होते ही पति-पत्नी दोनों सपने देखते हैं कि बेटा होगा तो डॉक्टर, इंजीनियर, आईपीएस, आईएस और बेटी हुई तो उसे जज, वकील और ना जाने क्या-क्या बनाने के विषय में मन ही मन विचारने लगते हैं।

लेकिन !!!! यह दोनों में से कोई नहीं विचारता कि बच्चे को संस्कार कहाँ से मिलेंगे। उसका राष्ट्र के प्रति, माता-पिता व अपने से बड़ों के प्रति क्या कर्त्तव्य होगा? और वर्त्तमान समय में स्कूल, कॉलेजों में भी कोई ऐसी शिक्षा पद्धति नहीं है, जो बच्चों को संस्कारवान् बना सके।

ऐसे में बिना विचारे जब सन्तान तैयार होती है तो उसका परिणाम यह निकलता है कि वह युवा होकर इस भौतिक संसार में कहीं ऐसा खो जाता है कि वो अपने संगी-साथियों के साथ अनेक प्रकार के नशें में डूबकर अपने परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति किए जाने वाले कर्त्तव्य आदि सबको भूल जाता है और ऐसे समय में माता-पिता के पास मात्र पछताने के सिवाय कुछ शेष नहीं रहता और फिर उन्हें बुढ़ापे में अन्धेरे के सिवाय कुछ नहीं दिखता। इसलिए बाद में पछताने से अच्छा अपनी सन्तानों को संस्कारवान् बनाने के लिए सबसे पहले विचार करें।

यह संस्कार पूरे विश्व में एक ही संस्था द्वारा दिया जाता है और उस संस्था का नाम है **"आर्य वीर दल व आर्य वीरांगना दल"** जिसकी शाखाएँ पूरे भारत व विश्व में फैली हुई हैं। इसलिए हम सभी को भविष्य में पछताना ना पड़े, अतः आज ही अपने निकट की आर्य वीर दल की शाखा का पता लगाएं और अपनी प्रिय सन्तानों को उससे जोड़ने के साथ-साथ इन संस्थाओं का तन-मन-धन से सहयोग करें।

आर्य जितेन्द्र भाटिया
व्यवस्थापक- **''युवा निर्माण''** व कोषाध्यक्ष (आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश)

टंकारा मोटरसाईकिल यात्रा के दौरान सीकर, राजस्थान पहुँचने पर
स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद) द्वारा आर्यवीरों का स्वागत व सम्मान

राष्ट्र एकता व अखण्डता मोटरसाईकिल यात्रा का विस्तृत विवरण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव पर आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में **"राष्ट्र एकता एवं अखण्डता मोटरसाईकिल यात्रा"** का आयोजन **महाशय धर्मपाल एम.डी.एच.** के सौजन्य से किया गया।

20 फरवरी 2017 को प्रातः 7 बजे नेहरू पार्क, नई दिल्ली से हम सभी के प्रेरणास्रोत आर्यवीर शिरोमणि एवं आर्य समाज के **भामाशाह माननीय श्री महाशय धर्मपाल आर्य जी ने 2600 किलोमीटर से अधिक की दिल्ली-टंकारा(गुजरात)-दिल्ली यात्रा को ओ३म् ध्वज लहराकर और अपना आशीर्वाद व शुभकामनाएं देकर प्रस्थान करवाया। जिसमें 22मोटरसाईकिलें, दो कारें एवं एक बड़ा टैम्पो शामिल था।** नेहरू पार्क, दिल्ली से चलकर यह यात्रा गुरुग्राम (गुड़गांव) पहुँची, जहाँ आर्य वीर दल के अधिकारी श्री राजेश आर्य जी के नेतृत्व में स्थानीय क्षेत्र की विभिन्न आर्य समाजों के सदस्यों व आर्यवीरों ने टंकारा यात्रा के सभी आर्यवीरों का भव्य स्वागत किया एवं जलपान कराया तथा यात्रा ने आगे के लिए प्रस्थान किया। अगला पड़ाव बहरोड़ आर्य समाज के प्रधान श्री रामानंद जी व विष्णु शास्त्री के सानिध्य में हुआ, यहाँ सभी आर्यवीरों को साथ लेकर मुख्य बाजार से शोभायात्रा निकाली और भव्य स्वागत के साथ जलपान की सुन्दर व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया। इस स्थान पर स्वामी कृष्णानन्द जी द्वारा यात्रा के लिये शुभाशीष भी प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त दयानन्द के सिपाही, कोठपुतली पहुँचे, यहाँ आर्य समाज के अधिकारी श्री रमेश आर्य द्वारा भव्य स्वागत कर मुख्य बाजार एवं राजमार्ग से शोभायात्रा निकाली और सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। वहाँ से यह यात्रा आगे के लिए रवाना हो गई। यह भव्य यात्रा आगे चलकर महर्षि दयानन्द सरस्वती उच्च माध्यमिक विद्यापीठ, बागवाड़ा, जयपुर में पहुँची, जहाँ आर्य समाज व स्कूल के अधिकारी श्री ब्रह्मदत्त शर्मा, श्री शिवदत्त शर्मा, श्री महेन्द्र कुमार शर्मा, श्री हनुमान सहाय शर्मा, श्री शिवनारायण शर्मा आदि एवं बच्चों ने भव्य स्वागत किया व जलपान कराया। यात्रा का क्रम जारी रखते हुए दोपहर को संस्कार भारती पी. जी. कॉलेज परिसर, बगरू, जयपुर पहुँचे, जहाँ डॉ. सुधीर आर्य (कॉलेज निदेशक व मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान), श्री देवेन्द्र शास्त्री (कार्यकारी संचालक, आर्य वीर दल, राजस्थान) व सहयोगी सदस्यों ने सभी आर्यवीरों का भव्य स्वागत किया व भोजन कराया और आगे की यात्रा के लिए शुभकामनाएं दी।

यह यात्रा अपने मार्ग को प्रशस्त करती हुई सायंकाल को आर्य समाज अजमेर, राजस्थान पहुँची, जहाँ पर आर्य समाज के अधिकारी प्रधान श्री रासासिंह रावत, मन्त्री श्री चांदराम आर्य व पाठशाला के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणीयों ने आर्य समाज में गुलाब के फूलों की वर्षा कर भव्य स्वागत किया व फलाहार कराया। इसके उपरान्त श्री यतेन्द्र शास्त्री व श्री विश्वास पारिक

गुरुग्राम, हरियाणा

गुरुग्राम, हरियाणा

दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव पर निकाली गई बाइक यात्रा का बहरोड़ में किया स्वागत

भास्कर न्यूज | बहरोड़

महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव पर राष्ट्र एकता एवं अखंडता को लेकर निकाली गई मोटर साइकिल यात्रा के सदस्यों का सोमवार को आर्य समाज मंदिर पर स्वागत किया गया। यह सौ सदस्यीय दल दिल्ली से गुजरात के टंकारा तक 26 सौ किलोमीटर की यात्रा करेगा। यात्रा में शामिल आर्य वीर दल के दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष जितेंद्र भाटिया ने बताया कि दिल्ली में सोमवार को आर्य जगत के भामाशाह धर्मपाल महाशय ने सौ सदस्यीय दल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यात्रा गुजरात के महर्षि दयानंद के जन्म स्थान टंकारा तक जाएगी। जिसका जयपुर, अजमेर, ब्यावर सहित अन्य स्थानों पर ठहराव होने पर दयानंद सरस्वती के जीवन के बारे में जानकारी देकर वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया जाएगा। उन्होंने बताया कि लोगों को यात्रा द्वारा देश की एकता एवं अखंडता को लेकर राष्ट्र निर्माण में योगदान करने का आह्वान किया जाएगा। यात्रा के सदस्यों को फूलमाला पहनाकर स्वागत किया गया। इस दौरान आर्य समाज अध्यक्ष रामानंद आर्य, प्रांतीय युवक अध्यक्ष रामकृष्ण शास्त्री, महंत रामदेव, रोहिताश्व कुमार यादव, मास्टर सत्यपाल आर्य, विनोद कुमार यादव, सुरेश आर्या, एकता आर्या, देवेंद्र आर्य, गौरव आर्य, महाशय पवन कुमार, पं. हजारी लाल आर्य, महाशय रामेश्वर दयाल, विष्णु आर्य, पं. राजेश आर्य आदि मौजूद रहे।

बहरोड़. सोमवार को आर्य समाज मंदिर पर मोटर साइकिल यात्रा का स्वागत करते लोग।

बहरोड़, राजस्थान

कोठपुतली, राजस्थान

कोठपुतली, राजस्थान

बागवाड़ा, राजस्थान

बगरू, राजस्थान

के नेतृत्व में अजमेर के मुख्य बाजार से भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। शोभायात्रा के उपरान्त अजमेर के बजरंग गढ़ चौराहा पर भजन संन्ध्या **"एक शाम ऋषि के नाम"** के कार्यक्रम का आयोजन दयानन्द बाल सदन, पातञ्जल योग समिति, भारत स्वाभिमान एवं भिनाय की कोठी न्यास की ओर से किया गया। जिसमें अजमेर के मेयर श्री धर्मेन्द्र गहलोत, जिला कलक्टर श्री गौरव गोयल, विधायक श्री भागीरथ चौधरी, ऋषि उद्यान के आचार्य कर्मवीर जी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस भजन संन्ध्या के अवसर पर सभी आर्यवीरों का जिसमें आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के सञ्चालक श्री जगवीर आर्य, महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य, कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया तथा उपसञ्चालक पं० रोहताश आर्य, श्री जगवीर आर्य का पुष्प मालाओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया तथा अजमेर के सभी प्रशासनिक अधिकारियों का भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री मोक्षराज आर्य द्वारा किया गया। अजमेर में सभी व्यवस्थाओं को पूरा करने में सर्वश्री सुनील जोशी, प्रदीप वर्मा, नीरज चौधरी, सुशील आर्य आदि का विशेष योगदान रहा। इसके उपरान्त भजन संन्ध्या में श्री दिनेश आर्य प्रधान शिक्षक (आ.वी.द.दि.प्र.) की भजन मण्डली सर्वश्री लक्ष्य आर्य, आलम आर्य, मोहित आर्य व करण आर्य ने देशी साज-बाज मटकों के माध्यम से ऋषि दयानन्द के भजनों की झड़ी लगा दी तथा साथ में

शोभायात्रा, अजमेर, राजस्थान

बजरंग गढ़ चौराहा, अजमेर, राजस्थान

बजरंग गढ़ चौराहा, अजमेर, राजस्थान

बजरंग गढ़ चौराहा, अजमेर, राजस्थान

जोशीले गायक पं० रोहताश आर्य जी ने भी उत्साही स्वरों में देशभक्ति गीतों को गाकर कार्यक्रम में नई ऊर्जा का संचार कर दिया व व्यायाम शिक्षक श्री अर्जुन कुंवर ने भी मधुर गीत द्वारा सबका मन हर्षित किया। रात्रि में ऋषि उद्यान में भोजन के पश्चात् सभी ने शयन किया। प्रातः नित्यकर्म करके सभी आर्यवीरों ने सर्वप्रथम यज्ञ किया, यज्ञ में आचार्य सत्यजीत् जी, स्वामी विदेह योगी जी एवं श्रीमती ज्योत्सना जी (धर्मपत्नी, स्व० डॉ. धर्मवीर जी) ने आशीर्वचनों के साथ आर्यवीरों का मनोबल बढ़ाते हुए यात्रा के लिए शुभकामनाएं दी। ऋषि उद्यान में सभी व्यवस्थाएं श्री ओम् मुनि आर्य जी व आचार्य कर्मवीर जी के निर्देशन में बहुत सुन्दर प्रकार से की गई थी। 21 फरवरी को प्रातः यज्ञ के बाद हम सब आर्यवीर भिनाय की कोठी को देखने गये, जहाँ पर ऋषि जी का प्राणान्त हुआ था। **इस स्थान को महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. के सहयोग से भव्य भवन के रूप में विकसित किया गया है। जो कि आपके ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धा व आस्था को दर्शाता है।** परोपकारिणी सभा में सभी ने वैदिक यन्त्रालय के दर्शन कर भीलवाड़ा, राजस्थान के लिये प्रस्थान किया। भीलवाड़ा में श्री विजय आर्य जी के नेतृत्व में आर्य समाज के सदस्यों व आर्य वीर दल, भीलवाड़ा के आर्यवीरों द्वारा भव्य शोभायात्रा का आयोजन कर सभी

ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान

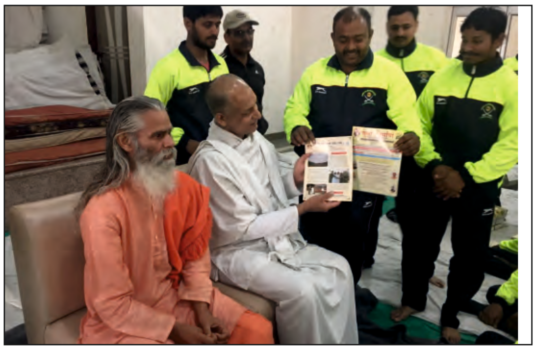

ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान

ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . भीलवाड़ा . बुधवार, 22.02.2017

भीलवाड़ा में आर्य समाज की ओर से आर्यवीर दल की वाहन रैली का सुखाड़िया सर्किल पर स्वागत किया गया। इस
रान सर्किल पर दल के युवाओं ने अखाड़ा प्रदर्शन भी किया।

भीलवाड़ा, राजस्थान

यात्रियों का भव्य स्वागत किया गया। दोपहर के भोजन की सुन्दर व्यवस्था श्री विजय आर्य द्वारा की गई। भोजन के उपरान्त आपने यात्रा को ओ३म् ध्वज लहरा करके उदयपुर के लिए रवाना किया। उदयपुर में सभी यात्रियों के लिए आर्य समाज व सिंधी धर्मशाला के अधिकारियों द्वारा भोजन व शयन की व्यवस्था की गई थी। 22 फरवरी को प्रातः नित्य कर्म के उपरान्त 6 बजे सभी आर्यवीर नौलखा महल देखने गये। यह एक ऐतिहासिक स्थल है, **जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना को अन्तिम रूप दिया था।** इसी स्थान पर महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर आधारित सुन्दर संग्रहालय (म्यूजियम) भी है, जिसको सभी आर्यवीरों ने बहुत उत्साहपूर्वक देखा और महर्षि के कार्यो को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। इसके उपरान्त महल में बनी विशाल यज्ञ- शाला में यज्ञ किया गया। यज्ञ के उपरान्त सा.आ.वी.दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक धर्मवीर आर्य (उत्तर प्रदेश) ने मधुर भजन द्वारा ऋषि दयानन्द के भावों को प्रस्तुत किया। नौलखा महल का पूरा दृश्य मनमोहक है। **नौलखा महल का पुनर्निर्माण व साज-सज्जा सा. आ.प्र.स. के यशस्वी प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी एवं हम सभी के प्रेरणास्रोत, आर्य समाज के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. द्वारा करवाया गया है।** यह मोटरसाईकिल यात्रा अपने मार्ग पर चलते हुए गांधी नगर, गुजरात में पहुँची। यहाँ पर श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी, प्रधान- सा.आ.प्र सभा व आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के नेतृत्व में आर्य समाज गांधी नगर के अधिकारी सर्वश्री नरोत्तम भाई, लीलाधर भाई, श्री रमेश शंकर, श्री जितेन्द्र कंसारा इत्यादि सदस्यों, महिलाओं, स्कूल के बालक व बालिकाओं द्वारा आर्यवीरों का पुष्प-मालाओं से भव्य स्वागत किया गया तथा आर्यसमाज गांधी नगर में दोपहर भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई। यहाँ पर पं० रोहताश आर्य, धर्मवीर आर्य तथा दिनेश आर्य की भजन मण्डली ने अपने मधुर भजनों से सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। दोपहर भोजन लेने के उपरान्त यह यात्रा सायंकाल राजकोट, गुजरात के हाथीखाना आर्य समाज में पहुँची। यहाँ पर आर्य समाज के प्रधान श्री रंजीत सिंह व सहयोगियों द्वारा आर्यवीरों का चन्दन तिलक लगाकर व गुलाब का फूल देकर शुभ स्वागत किया गया। रात्रि भोजन, विश्राम व प्रातः काल, प्रातः राश की सुन्दर व्यवस्था आर्य समाज राजकोट की ओर से की गई थी। 23 फरवरी को प्रातः यज्ञ के उपरान्त आर्यवीरों ने टंकारा के लिए प्रस्थान किया। आर्यवीरों ने उत्साहपर्वूक अपनी सूझ-बूझ व तालमेल से टंकारा के मुख्य द्वार ऋषि दयानन्द की पावन जन्म भूमि टंकारा, गुजरात में दोपहर एक बजे कदम रखा, यहाँ टंकारा के मुख्य द्वार पर श्री परेश भाई के नेतृत्व में आर्य वीर दल टंकारा ने यात्रियों का भव्य स्वागत कर टंकारा के मुख्य बाजार से शोभायात्रा निकाल कार्यक्रम स्थल गुरुकुल में यात्रा का भव्यता से प्रवेश कराया। इस स्थान पर प्रतिवर्ष

भीलवाड़ा, राजस्थान

सिन्धी धर्मशाला, उदयपुर

नौलखा महल, उदयपुर

नौलखा महल, उदयपुर

आर्य समाज, गांधी नगर, गुजरात

आर्य समाज, हाथीखाना, राजकोट गुजरात

आर्य समाज, हाथीखाना, राजकोट गुजरात

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आगमन

विशाल ऋषि बोधोत्सव का आयोजन टंकारा ट्रस्ट व गुरुकुल की ओर से आयोजन किया जाता है। हम सब आर्यवीरों के लिये टंकारा ट्रस्ट की ओर से ठहरने व भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। यह सारी व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट के श्री अजय सहगल जी के नेतृत्व व आर्य वीर दल गुजरात के संचालक श्री हंसमुख भाई जी के मार्गदर्शन में हुई। 24 फरवरी को प्रातः नित्यकर्म के उपरान्त यज्ञशाला में सभी आर्यवीर अपने दल के साथ यज्ञ में पहुँचे।

बृजमोहन लाल मुंजाल योग भवन, टंकारा गुरुकुल

यज्ञशाला, टंकारा गुरुकुल

यज्ञशाला में सभी आर्यवीर एक गणवेश में सुन्दर छठा के साथ सुशोभित हो रहे थे। **यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण स्थल पर आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के सञ्चालक श्री जगवीर आर्य व महामन्त्री बृहस्पति आर्य द्वारा, मुख्य अतिथि को पुष्पमाला से अभिनन्दन करा ट्रस्ट ने दल का जो गौरव बढ़ाया, उसके लिए दल ट्रस्ट का आभार प्रकट करता है व श्री बृहस्पति आर्य (महामन्त्री, आ.वी.द,दि.प्र.) को ध्वजारोहण व्यवस्था की प्रक्रिया को सम्पन्न कराने का दायित्व देकर जो दल का सम्मान बढ़ाया, इसके लिए दल पुनः ट्रस्ट का हृदय से धन्यवाद करता है। ध्वजारोहण पर ध्वज गीत आर्य जगत् के प्रसिद्ध महाभजनोपदेशक श्री सत्यपाल "पथिक" अमृतसर, पंजाब ने प्रस्तुत किया।** 24 फरवरी, 2017 को प्रातः 10.30 बजे टंकारा ट्रस्ट, गुरुकुल एवं टंकारा

श्री सत्यपाल पथिक के साथ टंकारा भूमि पर

आर्य समाज टंकारा में भव्य व्यायाम प्रदर्शन

आर्य वीर दल की ओर से विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जो टंकारा गुरुकुल के मुख्य द्वार से आरम्भ होकर टंकारा के मुख्य बाजार से गुजरती हुई टंकारा गुरुकुल में ही सम्पन्न हुई। इस शोभायात्रा में आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश से आये हुए अधिकारियों, शिक्षकों व आर्यवीरों ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन कर सभी को आश्चर्य-चकित किया। पूरी शोभायात्रा में यह व्यायाम प्रदर्शन मुख्य आकर्षण का केन्द्र बना रहा। कार्यक्रम में विभिन्न प्रान्तों से आए हुए सैकड़ों आर्यजनों ने आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के इस साहसिक मोटरसाईकिल यात्रा की भूरि-भूरि प्रशंसा कर स्वयं भी उत्साही हुए और हमारा भी उत्साह बढ़ाया।

टंकारा की शोभायात्रा में भव्य व्यायाम प्रदर्शन

टंकारा की शोभायात्रा का दृश्य

इस कार्यक्रम में प्रतिवर्ष श्री हंसमुख भाई संचालक (आ.वी.दल गुजरात) के नेतृत्व में आर्य वीर दल गुजरात की आगामी वर्ष के कार्यों की तैयारी के लिए विशेष बैठक आयोजित होती है। इस बृहद् बैठक में आर्य वीर दल, गुजरात के निमन्त्रण पर आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य गत दो वर्षों से अपने अमूल्य सुझाव देते हुए विधिवत् भाग ले रहे हैं। आ.वी.द. गुजरात द्वारा यह सम्मान देने पर दिल्ली प्रदेश आभार व्यक्त करता है

इस शोभायात्रा में पं० रोहताश आर्य (उप-सञ्चालक आ.वी.द., दि.प्र.) ने ओजस्वी वाणी में आर्यगीतों की झड़ी लगा दी और टंकारा के वातावरण को गुँजायमान कर दिया। भोजन के उपरान्त दिनांक 24 फरवरी को 2.30 बजे यह आर्यवीरों की यात्रा दिल्ली की ओर प्रस्थान करती हुई शाम को राधनपुर में पहुँची। यहाँ पर रात्रि भोजन, विश्राम व प्रात:राश की सुन्दर व्यवस्था थी। इस स्थान की सभी व्यवस्था श्री भरत आर्य, अध्यक्ष, भाजपा राधनपुर व सहयोगियों द्वारा की गई। दिनांक 25 फरवरी को राधनुपर से आर्ष गुरुकुल, आबू पर्वत के लिए

टंकारा की शोभायात्रा का दृश्य

प्रस्थान किया। दोपहर 3 बजे आबू पर्वत बॉर्डर पर गुरुकुल के आचार्य श्री ओमप्रकाश जी सहित कई सदस्य भव्य स्वागत के लिए उपस्थित थे। यहाँ से यह यात्रा शोभायात्रा का रूप लेकर गुरुकुल परिसर पहुँची। यहाँ दोपहर भोजन के उपरान्त यह यात्रा प्रचार सामग्री का वितरण करते हुए गुरुमुख तक गई तथा रात्रि 8.30 बजे प्राकृतिक नक्की झील का नजारा देखने के साथ इस झील की चौपाटी पर **"एक शाम ऋषि के नाम"** के भजन सन्ध्या का कार्यक्रम गुरुकुल के आचार्य श्री ओम् प्रकाश आर्य जी के सान्निध्य में हुआ। यहाँ पर आर्यवीर अपने साज-बाज के साथ दिनेश आर्य, पं० रोहताश आर्य, धर्मवीर आर्य सहित समस्त आर्यवीरों ने ऋषि, आर्य समाज व देशभक्ति के भजनों व गीतों के माध्यम से नक्की झील के वातावरण को जीवंत व ऊर्जावान् बना दिया। इस कार्यक्रम में स्थानीय दुकानदारों और पर्यटकों ने बहुत उत्साह से बढ़-चढ़ कर भाग लिया व स्थानीय श्री गौरव ने आर्यवीरों का उत्साह देखकर अपनी ओर से सभी को आइसक्रीम बांटी, जिसका दल ने धन्यवाद किया। इसके उपरान्त सभी आर्यवीर वापिस गुरुकुल में पहुँचकर रात्रि भोजन व विश्राम किया। 26 फरवरी को प्रात: 7 बजे यज्ञ व प्रात:राश करके यह यात्रा ने पाली के लिए प्रस्थान किया। वैदिक प्रचार की धूम मचाते हुए यह यात्रा पाली पहुँची। यहाँ श्री महेश बागड़ी जी के नेतृत्व में आर्य वीर दल पाली के लगभग 100 आर्यवीरों व वीरांगनाओं ने यात्रा का भव्य स्वागत किया। स्वागत के उपरान्त आर्य वीर दल पाली ने पाली के मुख्य बाजार से भव्य शोभायात्रा निकाल करके अपने मुख्य कार्यालय पर सम्पन्न किया। मुख्य कार्यालय पर भव्य स्वागत-सम्मान के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहाँ पर आर्य वीर दल के सभी आर्यवीरों का भव्य स्वागत के साथ आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के सभी अधिकारियों को राजस्थानी पगड़ी (साफा) पहना कर व एक-एक ऋषि दयानन्द का चित्र भेंट किया। इसके बाद यहाँ दिनेश आर्य व साथी धर्मवीर आर्य शिक्षक तथा रोहताश आर्य जी ने ओजस्वी गीतों के माध्यम से राष्ट्र एकता का प्रचार-प्रसार किया। बाद में सभी आर्यवीरों ने विशेष प्रकार का राजस्थानी भोजन दाल बाटी का आनन्द लिया। इस कार्यक्रम के उपरान्त यह आर्यों का काफिला सायंकाल दिनांक 26 फरवरी को ऐतिहासिक आर्य समाज ब्यावर, राजस्थान में पहुँची। यह आर्य समाज 1885 में बनी थी। यहाँ पर रात्रि विश्राम व भोजन की व्यवस्था आर्य समाज ब्यावर की ओर से की गई थी। आर्य समाज ब्यावर के माननीय प्रधान श्री इन्द्रदेव आर्य व मन्त्री श्री वैभव आर्य, श्री अभय आर्य, श्री बृजेश आर्य आदि ने सभी व्यवस्था बहुत सुन्दर रूप से की थी। इस आर्य समाज में विशेष आकर्षण 100 वर्ष पुराना आर्य वीरों का अखाड़ा देखने को मिला, जो अब तक भी सुचारू रूप से चल रहा है। इस अखाड़े के संचालक

राधनपुर, राजस्थान

आबू पर्वत बॉर्डर, राजस्थान

नक्की झील चौपाटी, आबू पर्वत, राजस्थान

आर्ष गुरुकुल, मुख्य द्वार, आबू पर्वत, राजस्थान

यज्ञशाला, आर्ष गुरुकुल, आबू पर्वत, राजस्थान

आर्य वीर दल पाली कार्यालय, राजस्थान

आर्य वीर दल पाली कार्यालय, राजस्थान

आर्य समाज ब्यावर, राजस्थान

गुरु लालाराम जी हैं, जो बड़ी लगन से आर्यवीरों को पहलवानी सिखाते हुए राष्ट्र व धर्म रक्षा तथा समाज सेवा के लिए तैयार कर रहे हैं। दूसरा विशेष सेवा कार्य देखने को मिला जो ब्यावर आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने ऐसे भोजन कराया जैसे कि माता अपने बच्चे को गोदी में बैठा कर भोजन खिलाती है। ठीक उसी प्रकार से ब्यावर आर्य समाज के ऋषि भक्तों ने भी स्वयं अपने हाथों से प्रत्येक आर्यवीर को भोजन खिलाया। हम सबको उस प्रकरण को देखकर अपना बचपन व माता-पिता के अटूट प्यार और स्नेह का आभास हुआ और सभी का हृदय भावुकता से भर आया। प्रातःकाल नित्यकर्म के उपरान्त यज्ञ के साथ भजनों का कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के पुरोहित पं० अमर सिंह जी व दल के महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य ने किया।

आर्य समाज ब्यावर, राजस्थान

ईश्वर भक्ति के गीतों के कार्यक्रम की प्रस्तुति आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के श्री दिनेश आर्य व साथी पं० रोहताश आर्य और वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री धर्मवीर आर्य ने किया। श्री अर्जुन कंवर ने ओजस्वी वाणी में महाराणा प्रताप को याद करते हुए राणा का यशोगान देशभक्ति गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। ब्यावर में स्थित तात्कालीन डाक बंगले में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 9 सितम्बर से 21 सिम्बर 1881 तक निवास किया, तत्पश्चात् मसूदा के लिए गये थे। (हम सभी ने वह स्थान देखा) 27 फरवरी को प्रातः यज्ञ उपरान्त यह आर्यवीरों की यात्रा पर्वतसर के लिए कूच कर गई।

तात्कालीन डाक बंगला, ब्यावर, राजस्थान

यहाँ पर दोपहर की भोजन व्यवस्था श्री किशनराम आर्य जी ने की थी। यात्रा का भव्य स्वागत कर पर्वतसर के मुख्य बाजार से शोभायात्रा को निकाला गया। आर्य भजनोपदेशक पं० भूपेन्द्र आर्य द्वारा भजनों व उपदेश के माध्यम से वेद प्रचार किया गया।

पर्वतसर, राजस्थान के मुख्य बाजार में शोभायात्रा

आर्यवीरों का यह काफिला सायंकाल वैदिक आश्रम, पिपराली, राजस्थान पहुँचा। इस आश्रम के संचालक, सीकर (राजस्थान) के सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी हैं। रात्रि भोजन, विश्राम व प्रातःराश की सारी व्यवस्था स्वामी सुमेधानन्द जी के द्वारा की गई थी। इस पूरी यात्रा में आपका विशेष मार्गदर्शन आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेशा को प्राप्त हुआ।

सीकर आश्रम में स्वामी जी का आशर्वाद प्राप्त

28 फरवरी को प्रातःकाल यज्ञ के उपरान्त स्वामी जी ने आर्यवीरों को आशीर्वाद दिया और सत्योपदेश के माध्यम से संगठन का महत्त्व बताया और साथ ही चरैवेति-चरैवेति का उद्बोधन दिया। आपने ओ३म् ध्वज व राष्ट्र ध्वज तिरंगा लहराकर इस यात्रा को दिल्ली के लिए प्रस्थान करवाया।

यज्ञशाला, वैदिक आश्रम, पिपराली, सीकर

मार्ग में ही दोपहर डी.ए.वी. स्कूल, बहरोड़ में स्कूल प्रबन्धकों, बालकों, बालिकाओं और आर्य समाज के प्रधान श्री रामानन्द आर्य जी द्वारा आर्यवीरों का स्वागत व सम्मान कर सभी को जलपान कराया व आगामी दिल्ली यात्रा के लिए शुभकामनाएं दी।

डी.ए.वी. स्कूल, बहरोड़, राजस्थान

28 फरवरी को दोपहर 3 बजे दिल्ली पहुँचने पर सागरपुर में आर्य वीर दल महात्मा नारायण स्वामी शाखा द्वारा पुष्प व पुष्प मालाओं द्वारा इस यात्रा के आर्यवीरों का सम्मान किया गया, जिसमें मुख्य रूप से शाखा के संरक्षक श्री अभिषेक आर्य, शाखानायक श्री संतोष आर्य व श्रीमती कमलेश आर्या का योगदान रहा। अन्त में आर्य समाज सी-3, जनकपुरी, दिल्ली में इस मोटरसाईकिल यात्रा का भव्य समापन हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज, सी-3, जनकपुरी के यशस्वी प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, मन्त्री श्री अजय तनेजा जी, श्री रमेश आर्य, श्री तोमर जी, श्री सुरेश जी आदि विभिन्न आर्यजन भव्य स्वागत के लिए उपस्थित थे। समापन कार्यक्रम के आयोजन

महात्मा नारायण स्वामी, शाखा, सागरपुर

में यात्रा के सौजन्यकर्त्ता व मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. विराजमान हुए, साथ ही श्री राजेन्द्र जी एम.डी.एच., श्री मनोज गुलाटी जी एम.डी.एच., श्री रविदेव गुप्ता जी (प्रधान द.दि.वे.प्र.मण्डल), मन्त्री श्री नागर जी, कैप्टन गुलाटी जी, पं० नरेन्द्र वेदालंकार जी आदि महानुभाव उपस्थित थे। स्वागत, सम्मान समारोह व आशीर्वाद में महाशय धर्मपाल जी ने आर्य वीर दल के इस **"राष्ट्र एकता व अखण्डता मोटरसाईकिल यात्रा"** के सभी आर्यवीरों को अपने कर-कमलों द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये और सभी आर्यवीरों को आर्य समाज, राष्ट्र तथा महर्षि दयानन्द के मिशन को प्रचार द्वारा और आगे बढ़ाने का आह्वान किया। साथ में सभी आर्यवीरों के लम्बी आयु की कामना की। **यात्रा का शुभारम्भ तथा समापन आर्य समाज के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. द्वारा सम्पन्न हुआ।** अन्त में आर्यवीरों के लिए भोजन की सुन्दर व्यवस्था आर्य समाज, सी-3, जनकपुरी की ओर से की गई थी।

महाशय जी का स्वागत करते हुए दल के संचालक

आर्य समाज सी-3, जनकपुरी, दिल्ली

आर्य समाज सी-3 में बैठे हुए आर्यवीर

इस विशाल आर्यो की टंकारा यात्रा के दौरान समय-समय पर आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के संगठन मन्त्री श्री संजय आर्य, श्री बृजपाल आर्य और सेवा समिति के अध्यक्ष श्री जयकिशन गुलिया जी आर्यवीरों का उत्साहवर्धन करते रहे। इस पूरी यात्रा के सफल आयोजन में आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के दिनेश आर्य, मधुर आर्य, लक्ष्य आर्य, शुभम आर्य, आलम आर्य, सत्यम् आर्य, शीतल आर्य, करण आर्य, मोहित आर्य, संजय आर्य, दीपिकेश आर्य, कनिष्क आर्य व नरेन्द्र आर्य आदि का विशेष योगदान रहा। संकल्पवान् व्यक्ति ही यश, पुरुषार्थ और ऐश्वर्य का भागी होता है। दृढ़ संकल्प के साथ हमारे शाखानायक श्री संजय आर्य जी द्वारा पूरी यात्रा में मोटरसाईकिल पर भारतीय ध्वज तिरंगा को अपने मजबूत हाथों में पकड़कर यात्रा की। आर्यवीर ने तिरंग झण्डा रास्ते में कहीं भी जमीन पर टिकने नहीं दिया। अन्त में महाशय धर्मपाल जी ने इस साहसी आर्यवीर को आर्य समाज सी-3, जनकपुरी में सम्मानित व पुरस्कृत किया।

पूरी यात्रा में सभी मोटरसाईकिलों ठीक प्रकार से चलें, इसके लिए शाखानायक निक्की आर्य द्वारा प्रतिदिन प्रात: जल्दी उठकर सभी की मोटरसाईकिलों में ऑयलिंग व सामान्य चेकिंग करने के लिए दल इस आर्यवीर का हृदय से धन्यवाद करता है। पूरी यात्रा को अविस्मरणीय बनाने के लिए श्री संदीप आर्य जी द्वारा अपने कैमरे से सुन्दर फोटो लिए गए। इसके लिए आपका हृदय से धन्यवाद करता है।

आर्य समाज सी-3 के प्रधान का स्वागत करते दल के कोषाध्यक्ष

इस राष्ट्र एकता और अखण्डता यात्रा के सूत्रधार श्री धर्मवीर आर्य व्यायाम शिक्षक आ.वी.द.दि.प्रदेश थे। इस यात्रा का सफल संचालन करने में आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के संचालक श्री जगवीर आर्य, महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य व कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया जी को श्रेय जाता है क्योंकि मोटरसाईकिलों द्वारा राष्ट्रीय राजमार्गो से गुजरकर 2600 किलोमीटर की यात्रा करना कोई आसान कार्य नहीं था। अन्त में मैं यही कहूँगा कि समाज को जागृत करने के लिए हमें ऐसी ऐतिहासिक स्थलों की यात्राएं कर वैदिक धर्म व राष्ट्रभक्ति का प्रचार-प्रसार करना चाहिए और इन यात्राओं के माध्यम से राष्ट्र की एकता का सन्देश देते हुए हमें वैदिक संस्कार, संस्कृति व सभ्यता का परिचय प्रत्येक नागरिक तक पहुँचाना चाहिए। इसमें हम सबका ही नहीं, विश्व का कल्याण है। इस यात्रा को करने के उपरान्त हम सभी में समाजोत्थान करने की भावनाएं और प्रबल हुईं। श्री अरुण प्रकाश वर्मा एवं आर्य समाज हनुमान रोड़ के सहयोग से 19 फरवरी को रात्रि टंकारा जाने वाले सभी मोटरसाईकिल यात्रियों के विश्राम की व्यवस्था आर्य समाज हनुमान रोड़ में की गई थी। इस यात्रा को सफल बनाने में हम उन सभी संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, सदस्यों, आर्यवीर व वीरांगनाओं, महिलाओं, और सेवकों का हृदय से धन्यवाद व आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने मार्ग में हम सभी का बहुत उत्साह व भव्यता से स्वागत और अभिनन्दन कर जलपान, भोजन व रात्रि विश्राम कराया और किसी भी प्रकार की कोई भी समस्या नहीं आने दी। हम सभी समाचार पत्रों व न्यूज चैनलों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस यात्रा की सूचना अपने समाचार पत्रों व न्यूज चैनलों पर प्रकाशित की। जो सम्मान आप सभी ने आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश को दिया है, वह अविस्मरणीय है। जब भी आप सभी के द्वारा किये गए व्यवहार को हम याद करते हैं, तो हृदय भावुक हो जाता है। ऋषि बोधोत्सव पर सभी को बधाई देते हुए मैं कहना चाहूँगा कि जगत्गुरु महर्षि दयानन्द जी के वेद सन्देश **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** को कदापि न भूलें। इन्हीं शब्दों के साथ आप सभी को प्रेम सहित हार्दिक नमस्ते।

पं० रोहताश आर्य
उपसंचालक आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश
दूरभाष-9891361321

परीक्षा में सफलता के सूत्र

मित्रों! जल्दी ही आपका सामना वार्षिक परीक्षा/बोर्ड की परीक्षा से होने वाला है। आप इसके लिए पूरी तैयारी से जुटे हुए भी हैं और कुछ तो पूरी तरह तैयार भी हो चुके हैं। पर यह एक बड़ा लक्ष्य है और इसमें पूरी सफलता के लिए एक बड़ी रणनीति की जरूरत होती है। अपने दैनिक जीवन में थोड़ा सा बदलाव आपको सर्वोत्तम परिणाम का अधिकारी बना देता है।

परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना सबका लक्ष्य होता है। इस सपने को पूरा करने के लए आपके पास स्थिरता, निरन्तरता, एकाग्रता, समर्पणभाव और योजनाबद्ध तरीके से कठोर परिश्रम करना जरूरी होता है। इनमें से किसी एक की कमी भी आपको अपने लक्ष्य से दूर कर सकती है। उदाहरण के लिए मोहित पढ़ाई तो दिन में 8-10 घण्टे करता है परन्तु पढ़ते समय उसका मन एकाग्र नहीं रहता। उसकी पढ़ाई का समय भी निरन्तर नहीं है और वह व्यर्थ की बातचीत या गपशप भी करता है तो यह निश्चय ही बेहद कठिन होगा कि वह अच्छे अंक प्राप्त कर सके। वस्तुतः परीक्षा में पूरी सफलता के लिए घण्टों की संख्या से ज्यादा जरूरी है मन की एकाग्रता। शान्त और एकाग्र मन कम समय में अधिक ग्रहण करता है और ऐसे मन में पढ़ा हुआ स्थिर भी होता है।

मन की एकाग्रता के लिए अच्छा भोजन और अच्छी नींद बेहद जरूरी है। "जैसा खाये अन्न वैसा होये मन" यह कहावत तो प्रसिद्ध ही है। पौष्टिक खायें और अच्छे नंबर लायें। परीक्षा के दिनों में ज्यादा पढ़ने के लिए आप अच्छे भोजन के प्रति लापरवाह हो जाते हैं तो यह बहुत ही नुकसानदेह है। आहार विशेषज्ञ डॉ. शिवानी के अनुसार प्रतिदिन आठ-दस बादाम और एक अनार खाने वाले बच्चे का दिमाग बहुत तेज और बहुत जल्दी अपने विषय को समझने की योग्यता वाला हो जाता है। कुछ किशोर इन दिनों बर्गर और पिज्जा तथा फास्ट फूड को खाने का हिस्सा बना लेते हैं। इससे आलस्य आता है और दिमाग भी भारी हो जाता है। इन दिनों फास्ट फूड से पूरी तरह बचना चाहिए। सलाद, दलिया और अखरोट का सेवन इन दिनों बेहद उपयोगी है। इनके अतिरिक्त नींबू पानी, नारियल पानी और ताजा जूस भी लेते रहना चाहिए।

परीक्षा के दिनों में वाट्सऐप, फेसबुक, स्नैपचैट और इंस्टाग्राम आदि के उपयोग से बचना चाहिए। यह आदत परीक्षा के दिनों में बहुत नुकसानदायक है। थकान होने पर थोड़ी देर के लिए उठें और माता-पिता, भाई बहन और अपने मित्रों से हल्की फुल्की बातचीत कर लें। अच्छी नींद का महत्त्व परीक्षा के दिनों में बढ़ जाता है। अच्छी नींद ऊर्जा और शक्ति का खजाना है। रात को सोने से एक घण्टा पहले हल्का भोजन करें और इष्टदेव का ध्यान करते हुए सो जाएं। अगले दिन की कार्ययोजना सोने से पहले ही तैयार कर लें। योजनाबद्ध अध्ययन सफलता की कुंजी है।

परीक्षा में पूर्ण सफलता के लिए ध्यान और व्यायाम भी बहुत आवश्यक है। सुबह तरोताजा होकर दस मिनट तक गायत्री मन्त्र का जप आपको ऊर्जा से भरपूर बना देता है। हल्के आसन, सूर्य नमस्कार, प्राणायाम और मित्रों के साथ संवाद करते हुए सुबह या शाम की सैर आपको स्वस्थ और शान्त बनाती है। शान्त मन में सारी पठित सामग्री स्थिर हो जाती है। परीक्षा के दिनों में माता-पिता और अन्य पारिवारिक सदस्यों की भूमिका भी बहुत अहम होती है। माता-पिता को बच्चों पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं बनाना चाहिए। उन्हें पढ़ाई के लिए पूर्ण अनुकूल वातावरण देने की कोशिश करनी चाहिए। बस इसी से सफलता सुनिश्चित हो जाती है। **'मोर स्माइल मोर मार्क्स'** का मूलमन्त्र याद रखना चाहिए। तो मित्रों! थोड़ा सा अपनी दिनचर्या में बदलाव लाकर पूरे आत्मविश्वास के साथ बोर्ड की परीक्षा में सर्वोत्तम सफलता पाने के लिए जुट जाइये। बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

डॉ. रामचन्द्र
संस्कृत विभाग युनिवर्सिटी कॉलेज, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
E-mail- ram80du@yahoo.com.in

आर्य वीर दल की स्थापना

श्री पं० शिवचन्द्र जी इसके प्रथम संचालक नियुक्त किये गये। अल्प काल में आर्य वीर दल ने पूरे भारत में प्रशंसनीय कार्य किये। जिसके फलस्वरूप आर्य नेताओं व विद्वानों पर होने वाले आक्रमणों पर अंकुश लगा व आर्यों की शोभायात्रा, नगर कीर्तन और उत्सव निर्विघ्न सम्पन्न होने लगे।

1931 में महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में "दूसरा आर्य महासम्मेलन" का आयोजन बरेली में किया गया। जिसमें भारत के सभी आर्यसमाजों से अपने यहाँ आर्य वीर दल की शाखाओं की स्थापना तथा संचालन की अनिवार्यता और आर्य वीर दल के कार्यों एवं इसके विस्तार में यथाशक्ति सहयोग, सहायता एवं प्रोत्साहन देने का निर्णय किया गया।

1936 में धुन के धनी, अदम्य साहसी व शूरवीर युवक **श्री ओमप्रकाश त्यागी जी आर्य वीर दल के संचालक नियुक्त हुये।** इनका नेतृत्व पाकर दल का तीव्रता से विस्तार हुआ। **1946-47 में नवाखली** (**बंगाल**) में मतान्ध-मुस्लिम अराजक तत्त्वों से आर्यवीरों ने हिन्दुओं की रक्षा की। **1947-48 में पाकिस्तान की सीमा** को पार करके भारतीय सीमा के अन्दर भारतीय चौकी पर आक्रमण करने आये पाकिस्तानी सैनिकों व अंसार गुण्डों से मुक्त करा आर्यवीरों ने पाकिस्तानी ध्वज को छीन लिया। **1947** में भारत के आजाद होने के बाद भी जब **"हैदराबाद निजाम"** के शासन से मुक्त नहीं हुआ था और निजाम ने अपनी क्रूरता से जनता को आतंकित कर रखा था, उस समय आर्य वीर दल के आर्यवीरों ने अपनी जान पर खेलकर **"हैदराबाद में ऊमरी नामक स्थान पर, एक बैंक में इस क्रूर निजाम का पैसा जमा था"** वहाँ से 30 लाख रुपये राष्ट्रहित हेतु लूट कर, उस समय के भारत के पहले गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल को यह राशि सौंप कर वीरोचित कार्य करने में सफलता प्राप्त की थी। **1947 में ही आर्यवीरों ने पाकिस्तान से सैकड़ों हिन्दुओं को सकुशल** भारत पहुँचाने का श्रेयस्कर कार्य किया था।

क्रमशः...

महर्षि दयानन्द जी द्वारा लिखित अपना जन्मचरित्र

जब शिवरात्रि आई तब (13) त्रयोदशी के दिन कथा का महात्म्य सुना के शिवरात्रि के व्रत करने का निश्चय करा दिया। परन्तु माता ने मने भी किया कि इससे व्रत नहीं रखा जाएगा तथापि पिताजी ने व्रत का आरम्भ करा दिया। और जब (14) चतुर्दशी की शाम हुई तब बड़े-बड़े बस्ती के रईस अपने पुत्रों के सहित मन्दिरों में जागरण करने को गये वहाँ मैं भी अपने पिता के साथ गया और प्रथम प्रहर की पूजा भी करी दूसरे प्रहर की पूजा करके पुजारी लोग बाहर निकलके सो गये। मैंने प्रथम से सुन रखा था कि सोने से शिवरात्रि का फल नहीं होता है। इसलिये अपनी आँखों में जल के छींटे मार के जागता रहा और पिता भी सो गये तब मुझको शंका हुई कि जिसकी मैंने कथा सुनी थी वही यह महादेव है वा अन्य कोई क्योंकि वह तो मनुष्य के जैसा एक देवता है। वह बैल पर चढ़ता, चलता, फिरता, खाता पीता त्रिशूल हाथ में रखता डमरू बजाता, शाप देता और कैलाश का मालिक है इत्यादि प्रकार का महादेव कथा में सुना था, तब पिताजी को जगा के मैंने पूछा कि यह कथा का महादेव है वा कोई दूसरा तब पिता ने कहा कि क्यों पूछता है। तब मैंने कहा कि कथा का महादेव तो चेतन है वह अपने ऊपर चूहों को क्यों चढ़ने देगा और इसके ऊपर तो चूहे फिरते हैं तब पिताजी ने कहा कि कैलाश पर जो महादेव रहते हैं उनकी मूर्ति बना और आह्वाहन करके पूजा किया करते हैं। अब कलियुग में उस शिव का साक्षात् दर्शन नहीं होता। इसलिये पाषाणादि की मूर्ति बनाके उन महादेव की भावना रखकर पूजन करने से कैलाश का महादेव प्रसन्न हो जाता है। ऐसा सुन कर मेरे मन में भ्रम हो गया कि इसमें कुछ गड़बड़ अवश्य है और भूख भी बहुत लग रही थी पिता से पूछा कि मैं घर को जाता हूँ। तब उन्होंने कहा कि सिपाही को साथ लेके चला जा, परन्तु भोजन कदाचित् मत करना। मैंने घर में जाकर माता से कहा कि मुझको भूख लगी है। माता ने कुछ मिठाई आदि दिया उसको खाकर (1) एक बजे पर सो गया। क्रमशः......

वेद स्वाध्याय

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः॥ ऋ० १।१।६॥

हे **(अङ्गिरः)** समस्त ब्रह्माण्ड के अङ्ग-अङ्ग में व्यापक और प्राणों के भी प्राण **(अङ्ग)** सबके मित्र **(अग्ने)** परमेश्वर **(त्वम्)** आप **(यत्)** जिस हेतु से **(दाशुषे)** सर्वस्व दान एवं आत्म-समर्पण करनेवाले उपासक के लिये **(भद्रम्)** कल्याणकारी सुख, ऐश्वर्य **(करिष्यसि)** प्रदान करते हैं **(तव इत् तत्)** वह आपका **(सत्यम्)** सत्य, अटलव्रत नियम है।

हे प्रभो! आपने ही तो कहा है- **ईशा वास्यमिदं सर्वं.....त्यक्तेन भुञ्जीथाः।** (यजु० ४०/१) सभी धन परमात्मा का है, अतः त्यागपूर्वक उसका उपभोग करो। आगे बतलाया है-

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम्॥ (ऋ० १/१/३) परमेश्वर की उपासना और भौतिक अग्नि को विविध कला-यन्त्रों में प्रयोग कर सभी आध्यात्मिक एवं भौतिक ऐश्वर्यों की प्राप्ति करो, जो प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होवें और तुम्हें यश एवं शूरवीरता को देनेवाले हों।

इसके अतिरिक्त- **स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥** (अथर्व० १९/७१/१) हे मनुष्यों! मैंने जो सभी अभीष्ट सुखों को प्राप्त कराने वाली इस वेदवाणी का उपदेश दिया है, उसके प्रचार-प्रसार के लिये अपनी सारी आयु, बल, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन, आध्यात्मिक शक्ति सभी को लगा दो अर्थात् इन सबको मुझे समर्पित कर ब्रह्मलोक को प्राप्त करो।

अङ्ग हे प्रियतम! आपकी इस आज्ञा को शिरोधार्य कर हमने अपना सर्वस्व आपके अर्पण कर दिया है। आप तो सब ऐश्वर्यों के स्वामी हैं सो हमारी यह तुच्छ भेंट आपकी प्रजा अर्थात् प्राणीमात्र के उपकार के लिये ही स्वीकार कीजिये। यह धन, सम्पत्ति, भावनादि हमारे थे ही कब? ये सब तो आपके ही हैं। हमने आपके आदेश को शिरोधार्य कर पुरुषार्थ द्वारा इन्हें एकत्रित मात्र कर लिया है। **मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सब तोय। तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मोय॥**

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये। हे वेदवाणी के स्वामिन्! यह सब ऐश्वर्य आपका ही है जिसे मैं आपकी प्रजा और जनहित के लिये समर्पित कर रहा हूँ। आप इसे स्वीकार कर मुझे अनुगृहित कीजिये।

हे अग्ने! सन्मार्ग प्रदर्शक भगवन्! हमने सुना है कि तेरा उपासक तेरे दर्शन पाने के लिये अपना सर्वस्व लुटा देता है, उसे तुम मालामाल कर देते हो। यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि देने वाले का तुम कल्याण करते हो, यह आपका अटल नियम है। जो तुम्हारी प्रजा के लिये भोजन, वस्त्र, अन्न, औषधालय, वापी, कूप, तड़ाग और विद्यालय खुलवाता है, उसे आप इस लोग और परलोक दोनों में सभी सुख साधनों को देते जाते हो। क्योंकि तुम्हें पता है कि अमुक व्यक्ति का धन परोपकारादि कार्यों में अपकी प्रजा के हितार्थ व्यय किया जा रहा है।

परन्तु यह तो प्रेयमार्ग है, जिसका फल परलोक में भोग लेने के पश्चात् इस लोक में फिर से जन्म लेना पड़ता है। यह तो सकाम कर्म या सौदागरी हुई। प्रभो! मुझे इस व्यवहार में रुचि नहीं है। अगले जन्म में कुछ अधिक साधन प्राप्त करने के लिये मैंने अपना सर्वस्व दाव पर नहीं लगाया था। मेरा उद्देश्य तो इस भौतिक ऐश्वर्यों को प्राप्त न कर आपके दर्शन लाभ करना है। योगदर्शन में महर्षि पतञ्जलि ने कहा है- **अपरिग्रह स्थैर्येजन्मकथन्ता सम्बोधः** (योग० २/३९) अर्थात् अपरिग्रह की सिद्धि हो जाने पर पूर्व जन्मों का ज्ञान हो जाता है।

शेष पृष्ठ 14 पर

महर्षि दयानन्द योगासन प्रतियोगिता
(दिल्ली राज्य)

1. **प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं की आयु वर्ग निम्न हैं-**
   14 वर्ष से कम आयु वर्ग (जन्मतिथि 27/04/2003 से पहले)
   17 वर्ष से कम आयु वर्ग (जन्मतिथि 27/04/2000 से पहले)
2. **इस प्रतियोगिता को दो भागों में विभाजित किया गया है:-**
   क. सामूहिक (न्यूनतम 12 व अधिकतम 15 प्रतिभागी होंगे)
   ख. एकल (जिसमें 1 प्रतिभागी होगा)
3. **सामूहिक प्रतिभागियों के आसन:-**
   1. पद्मासन 2. गर्भासन 3. कुकुटासन 4. पश्चिमोत्तानासन 5. अर्धमत्स्येन्द्रासन 6. चक्रासन 7. धनुरासन 8. पूर्वोत्तानासन 9. वातायनासन 10. टिट्टीभासन 11. मत्स्यासन 12. बकासन 13. एकपाद स्कन्धासन 14. उत्तानपादासन 15. सर्वांगासन 16. शीर्षासन 17. हलासन 18. नटराज आसन
4. **एकल प्रतिभागी के आसन:-**
   1. वृश्चिकासन 2. पूर्ण शलभासन 3. मयूरासन 4. हस्तवृक्षासन 5. भूनमनासन 6. विपरीत पश्चिमोत्तानासन 7. पद्म बकासन 8. टिट्टीभासन
5. छात्र व छात्राओं के लिए प्रत्येक आसन एक समान होंगे।
6. ऊपर दिए गए आसनों में से सामूहिक प्रतिभागियों को 8 आसन करने अनिवार्य होंगे, जिसकी समय सीमा 6 मिनट होगी।
7. एकल प्रतिभागी के लिए उपरोक्त दिए गए आसनों में से 4 आसन करने अनिवार्य होंगे, जिसकी समय सीमा 5 मिनट होगी।
8. सामूहिक प्रतियोगिता का प्रत्येक आसन 10 अंक का होगा तथा 20 अंक अनुशासन व गणवेश के होंगे। पूर्णांक 100 अंकों का होगा।
9. एकल प्रतियोगिता का प्रत्येक आसन 20 अंक का होगा तथा 20 अंक अनुशासन के होंगे। पूर्णांक 100 अंकों का होगा।
10. **शुल्क:-**
    सामूहिक प्रतिस्पर्धा शुल्क- 1100/- व एकल प्रतिस्पर्धा शुल्क- 300/-
11. **पुरस्कार राशि:-**
    सामूहिक प्रतियोगिता पुरस्कार:-
    प्रथम - 3100/- द्वितीय- 2100/- तृतीय पुरस्कार-1100/-
    एकल प्रतियोगिता पुरस्कार:-
    प्रथम - 1500/- द्वितीय- 1100/- तृतीय पुरस्कार-750/-

नोट- निर्णायकों का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।

आगामी अंक में तिथि, स्थान व सम्बन्धि सूचनाएं प्रकाशित की जाएंगी

जानकारी हेतु सम्पर्क करें- 9999725093, 9873390596

रोजगार योजना सम्बन्धी सूचना

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में रोजगार सम्बन्धी बैठक 12 मार्च के स्थान पर रविवार 19 मार्च को सांय 4 बजे दल के मुख्य कार्यालय पर रखी गई है। लिखित सुझावों पर ही विचार किया जाएगा।

विनम्र प्रार्थना

वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार, आर्य समाज के भविष्य के लिये व आर्य वीर दल की शाखाओं के विस्तार एवं उन्नति के लिए दल में कार्यरत शिक्षकों हेतु आर्य वीर दल को मासिक सहयोग देवें।

द्वितीय शिक्षक कार्यशाला सम्पन्न

दल के मुख्य कार्यालय आर्य समाज मिण्टो रोड पर 4-5 मार्च, 2017 को शिक्षक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली के 12 शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य सभी शिक्षकों की एकरूपता व योग्यता को और अधिक प्रभावशाली बनाना था। जिससे ये शिक्षक अपने-अपने क्षेत्रों में शाखाओं के माध्यम से संगठन को दृढ़ता प्रदान करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्य समाज की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर सकें। इस प्रकार की कार्यशालायें संगठन की भावी शिक्षण व्यवस्था को प्रभावशाली बनाती हैं। यह कार्यशाला प्रतिमाह आयोजित की जाती हैं।

धर्मवीर आर्य
(उप-प्रधान, शिक्षक, आ.वी.द.दि.प्र.)

आगामी तृतीय शिक्षक कार्यशाला

दिल्ली के सभी शाखानायक, उप-व्यायाम शिक्षक व व्यायाम शिक्षकों की प्रान्तीय शिविर हेतु विशेष कार्यशाला आगामी 8-9 अप्रैल, 2017 को आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के मुख्य कार्यालय पर आयोजित की जाएगी। सभी 8 अप्रैल प्रात: 9 बजे अवश्य पहुँचें। सन्ध्या-हवन, पाठ्यक्रम की पुस्तक, कॉपी-पेन, एक लाठी अपने साथ अवश्य लाएं।

पृष्ठ 13 का शेष वेद सन्देश.....

हे भगवन्! मुझे इतने जान लेने मात्र से ही सन्तोष नहीं है। मैं जिसके जान लेने पर अन्य किसी वस्तु को जानने की इच्छा ही नहीं रहती, उस ज्ञान की आशा लगाये बैठा हूँ। जब सामान्य भौतिक पदार्थों का दान करनेवाले जनों का आप कल्याण करते हो और यह आपका व्रत है तो मैंने-

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में॥

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि तेरे दर पर झोली लेकर आये इस याचक को आप खाली हाथ नहीं लौटायेंगे और मेरी झोली को भर मेरी जन्म-जन्म की प्यास को मिटा देंगे।

हे प्रभो! मैंने अपना सर्वस्व तुम्हारे अर्पण किया है। कुछ लौकिक सुख, सम्पत्ति, मान-सम्मान पाने के लिये नहीं। मुझे तो वह धन चाहिये जिसे पा लेने के पश्चात् और कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती। जिसके सामने संसार के सारे वैभव हेय लगते हैं।

मोती मिला है मुझको जीवन के मानसर में।
कंकर बटोरने की क्यों कामना करूँ मैं॥

स्वामी देवव्रत सरस्वती
प्रधान सञ्चालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

दिल्ली प्रदेश द्वारा प्रथम बार 15 दिवसीय प्रान्तीय शिविर

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक- शुक्रवार 26 मई से रविवार 11 जून 2017 तक

(शिविर में शिवरार्थी बनने हेतु अभी से तैयारी करें)

टंकारा यात्रा की स्वर्णिम झलकियाँ

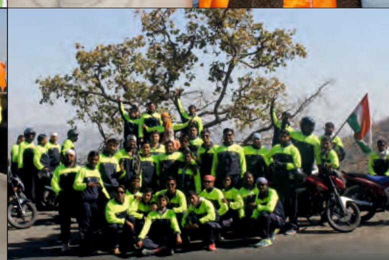

विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों में मोटरसाईकिल यात्रा का प्रकाशन

देवेश पांडे, डॉ. जितेंद्र बोहरा एवं पी. सौजन्या ने किया।

'एक शाम ऋषि के नाम' यात्रा रवाना

अजमेर | दिल्ली प्रदेश आर्यवीर दल से 100 आर्यवीरों की यात्रा के अजमेर पहुंचने पर अजमेर दयानंद बाल सदन, पतंजलि योग समिति भारत स्वाभिमान, भिनाय की कोठी न्यास की ओर से स्वागत किया गया। यह यात्रा 23 फरवरी को महर्षि दयानंद सरस्वती की जन्मस्थली गुजरात टंकारा पहुंचेगी। मुख्य अतिथि मेयर धर्मेंद्र गहलोत ने महर्षि दयानंद सरस्वती के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कलेक्टर गौरव गोयल ने कहा कि महर्षि दयानंद 19वीं सदी के महान् सुधारक थे। विशिष्ट अतिथि विधायक भागीरथ चौधरी ने ऋषि दयानंद के बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। दिल्ली के आर्यवीर दिनेश की टोली ने आर्यवीरो उठो जागो वेदों का डंका बजा दो, मेरा रंग दे बसंती चोला आदि देश भक्ति व ऋषि भक्ति के गीत सुनाए। कार्यक्रम संचालन डॉ. मोक्षराज ने किया। यतींद्र शास्त्री आर्यवीर दल के संभाग संचालक, विश्वास पारीक जिला संचालक, सुशील शर्मा नगर संचालक सहित कई सदस्यों ने गीत सुनाए।

दैनिक भास्कर

खबरें फटाफट

वाहन रैली पहुंची बैरां, स्वागत किया

बैरां | महर्षि दयानंद के सरस्वती की 193वीं जयंती पर दिल्ली से टंकारा (गुजरात) तक राष्ट्र एकता एवं अखंडता को लेकर वाहन रैली निकाली जा रही है। वाहन रैली का नवयुवक मंडल बैरां की ओर से स्वागत किया गया। संत शिरोमणि भरूजपाल आर्य ने बताया कि यह रैली राष्ट्र बचाओ के लिए 20 फरवरी को दिल्ली से शुरू हुई जो 28 फरवरी को टंकारा पहुंचेगी। इस दौरान सुरेंद्र शर्मा, मोहन लाल गुर्जर, रायमल गुर्जर, भैरू लाल बलाई, मेवाराम रैगर आदि उपस्थित थे।

यज्ञ आयोजन, बाइक रैली का किया स्वागत

कोटपूतली, (बालकृष्ण शुक्ला): आर्य समाज, कोटपूतली की ओर से सोमवार को समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में पूतली स्थित श्री देवनारायण मंदिर परिसर में हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया। भजनोपदेशक रामावतार पुरुषार्थी ने यज्ञ संपन्न करवाया। मंदिर के महंत कैलाशदास मुख्य यजमान रहे। इस दौरान समाज के प्रवक्ता रमेश आर्य ने स्वामी दयानंद की जीवनी पर प्रकाश डाला। इस दौरान दिल्ली से गुजरात जा रही 'राष्ट्रीय एकता व अखण्डता मोटरसाइकिल रैली' का स्वागत किया गया।

''युवा निर्माण'' पत्रिका हेतु सदस्य बनें

"युवा निर्माण" पत्रिका के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने हेतु पत्रिका को व्यक्ति-व्यक्ति, घर-घर की आवाज बनाने के लिए इस पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनें। वार्षिक शुल्क मात्र 150/- रुपये है।

आवश्यक सूचना

आर्य वीर दल के इतिहास से सम्बन्धित आपके पास कोई लेख/पूर्व स्मृतियाँ हैं जो आर्य वीर दल में आने वाली पीढ़ियों को उसका लाभ पहुँचा सके, वह सब दल के ईमेल- aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com या दल के मुख्य कार्यालय पर विषय को टाईप करवाकर भेज सकते हैं। आप वॉइस रिकॉर्डिंग के माध्यम से भी वाट्सऐप पर भेज सकते हैं। वाट्सऐप नं- 9990232164 है।

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का प्रयास है कि पूरे भारत में दल के गणवेश में एकरूपता हो। इस हेतु किसी भी प्रान्त को दल का गणवेश चाहिए तो वह आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश से सम्पर्क कर सकता है।
सम्पर्क सूत्र- 9810754638

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश अपने कार्यों को दल के website: www.aryaveerdal.org व फेसबुकअकाउंट Arya Veer Dal Delhi Pradesh पर अपलोड करता है। आप सभी आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के इन दोनों पेजो से जुड़े व उसको लाईक और शेयर करे।

अनुपम दिनचर्या की प्राप्ति

आर्य जगत् व आर्यवीरों की भारी मांग पर "अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि" संकलनकर्त्ता- श्री दिनेश आर्य द्वारा द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया जा चुका है। यह सुन्दर कृति आप आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के मुख्य कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।
सम्पर्क सूत्र- 9810754638, 9990232164

(संस्था को दी गई दानराशि आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के लिए, 10/63 (i) क्रिएटिव प्लैनेट, कीर्ति नगर ओद्यौ. क्षेत्र, नई दिल्ली-110015 द्वारा मुद्रित

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, आर्यसमाज मिण्टो रोड, डी.डी.यू.मार्ग, निकट-रणजीत सिंह फ्लाईओवर, नई दिल्ली-2 से प्रकाशित

Email : aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com | Web : www.aryaveerdal.org

सम्पादक : जगवीर आर्य 9810264634 | सहसम्पादक : बृहस्पति आर्य 9990232164 | व्यवस्थापक : जितेन्द्र भाटिया 9811322155 | मार्गदर्शक : आचार्य हरिप्रसाद 9871516470

संस्था के समस्त अधिकारी संस्था में अवैतनिक सेवा प्रदान करते हैं

प्रेषित